June 2018

# टाइम्स ऑफ बायोडॉयवर्सिटी

जैवविविधता एवं पर्यावरण पर मासिक पत्रिका

# Times of Bio diversity

Monthly Magazine on Biodiversity & Environment

Year - 3, Volume - 12, June 2018

RNI No. MPBIL/2015/67811

ISSN No. 2456-6918

# प्लास्टिक प्रदूषण एक चुनौती

करेंगे संग प्लास्टिक प्रदूषण से जंग

विश्व पर्यावरण दिवस

भारत 2018

UN environment

डाक पंजीयन संख्या : म.प्र. / भोपाल / 4-450 / 2017-19

Published by : Global Biodiversity Education Society, Bhopal

# विश्व पर्यावरण दिवस

5 जून 2018

के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम

# Editorial

D. P. Tiwari
Managing Director
Times of Biodiversity

## प्लास्टिक प्रदूषण एक चुनौती

पर्यावरण बचाने हेतु सम्पूर्ण विश्व चिंतित है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा विश्व स्तरीय आयोजन के लिए भारत को चुना जाना ग्लोबल पर्यावरण संरक्षण हेतु पिछले 25 वर्षो में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रदर्शित करता है।

पर्यावरण प्रदूषण से हमारा अस्तित्व एवं संपूर्ण जीवन प्रभावित होता है। जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग जैसे मुद्दों से भविष्य में होने वाले प्रभावों, समुद्रीजल में वृद्धि, जनसंख्या पलायन, खाद्य–समस्या, स्वास्थ्य–समस्या, पेयजल–समस्या, प्राकृतिक आपदायें (अतिवृष्टि, सूखा, बर्फ वर्षा, अम्ल वर्षा, समुद्री तूफान आदि।) की आशंकाओं से संपूर्ण विश्व चिंतित ही नहीं भयभीत भी है।

पर्यावरण के महत्वपूर्ण मुद्दे पर भारत की परंपरायें सदियों से प्रकृति से जुडी रही हैं, यहां नदियों, पहाड़ों, वृक्षों (बरगद जैसे बड़े एवं तुलसी जैसे छोटे, आंवला जैसे मध्यम), पशुओं (समस्त देवताओं के वाहन हाथी से लेकर चूहे तक) एवं फूलों औषधि पौधों आदि की पूजा की जाती है, जो संरक्षण का ही एक पुरातन प्रयास है जो आधुनिक युग में भी प्रभावशील है। समस्त धर्मों के धर्माचार्य नदी बचाने हेतु प्रयासरत है।

चिंता की बात समुद्र के पानी में प्लास्टिक के एकत्रीकरण एवं समुद्री जीवों के इसके कारण मृत होने की ही नहीं है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों से निकल रही एवं बह रही नदियों के जीवों के लिये भी यह हानिकारक है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा 05 जून को एक महत्वपूर्ण घोषणा की गई है कि भारत 2022 तक सिंगल युज प्लास्टिक से मुक्त हो जायेगा। इसकी शुरूआत महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड आदि प्रदेशों ने कानून में प्रावधान लाकर प्रारम्भ कर दी है।

पर्यावरण का मुद्दा कानून अकेले से नियंत्रित नहीं हो सकता इसके लिये सोच एवं व्यवहार बदलने की आवश्यकता है। इस बारे में सोशल मीडिया पर लाखों संदेशों, हजारों वीडियोज, समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा किये गये आयोजनों एवं इनमें जनमानस की सहभागिता दर्शाती है कि वास्तव में पर्यावरण को बचाना एक जन आंदोलन का रूप ले चुका है एवं पूरे विश्व में लाखों युवा इसको नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

प्रदेश स्तरीय आयोजनों में माननीय मुख्यमंत्री जी का उपस्थित रहना, देश स्तरीय आयोजन में माननीय प्रधानमंत्री जी एवं मंत्री पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन का सक्रियता से भाग लेना राजनीतिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

**आइयें हम भी इस मुहिम में साथ चलें!!!**

**D. P. Tiwari**

# Content


5 जैवविविधता संरक्षण एवं संवहनीय उपयोग
अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस मई 22, 2018

13 प्रदेश में जैव विविधता को बढ़ावा देने की नई पहल
पहली बार राज्य स्तरीय जैव विविधता पुरस्कार वितरित

18 जैवविविधता संरक्षण एवं संवहनीय उपयोग
एक संकल्प

21 World Environment Conference
Save Nature Save Future

24 गाय की देशी नस्लों का संरक्षण
एवं उसकी ग्रामीण विकास में भूमिका
जैवविविधता संरक्षण के सारथी
अनुभव सहभाजन

31 लोबल बायोडायवर्सिटी एजुकेशन सोसायटी की पहल
वरिष्ठ नागरिको की शहरी पर्यावरण सुधार में भूमिका
चाणक्यपुरी रहवासी मोहल्ला कल्याण समिति
विश्व पर्यावरण दिवस

34 गर्म पानी के झरने
(Hot Water Springs)

37 Beat Plastic Pollution

39 Global Celebration - India
World Environment Day 2018



**Patron**
V. R. Khare

**Editor-in-Chief**
D. P. Tiwari

**Executive Editor**
V. S. Pandey
Onkar Singh Rana
R. K. Mishra

**Advisory Board**
Ajit Sonakiya
Vipin Vyas
M. K. Khan
Smt. Sunita Kumar
Madhuri Tiwari

**Reporting Team**
R. R. Soni
Shashank Shivam Mishra
Raviraj Tomar

**Co-Editor**
J. P. Shrivastava, Bhopal
M. K. Shrivastava, Bhopal
R. K. Dubey, Lucknow
Kamal Vyas, Jhansi
Dr. Ravindra Abhyankar
Ravi Upadhyay
Mohit Manwani

**ICT/Multimedia Editor**
Saurabh Bansal
Smt. SharadTrivedi Upadhyay
Dr. Ruchi Kurapa Shroti

**Graphic Editor/Cover Design**
Raviraj Tomar



**For Advertisement**
Subscription/Contact
9425029009
Email dwarika30@yahoo.com



**Printed By :** Flexy Joseth, **Published by :** D. P. Tiwari on behalf owned by Global Biodiversity Education Society, Bhopal (M. P.) and printed at Maruti Enterprises, 12 Kotwali Road, Bhopal (M. P.) **Email** marutienterprises@rediffmail.com and Published at 16-A, Janki Nagar, Near Suyash Hospital Chunabhatti, Kolar Road Bhopal (M. P.) **Mobile No. 9425029009** Email - dwarika30@yahoo.com. **Editor** D. P. Tiwari

# जैवविविधता संरक्षण एवं संवहनीय उपयोग

## अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस मई 22, 2018

श्री राहुल डोंगरे एवं डॉ. एस. डी. उपाध्याय
वानिकी विभाग,कृषि महाविद्यालय,
ज.ने.कृ.वि.वि.,जबलपुर

### जैवविविधता क्या है?

- जैवविविधता दो शब्द जीव तथा विविधता से बना है जिसका आशय पारिस्थितिक तंत्र में विद्यमान सजीव प्राणियों की विविधता तथा संग्रह से है।
- जैव विविधता का प्रथम प्रयोग 1985 में डब्ल्यु. जी. रोजेन ने किया था।

### जैव विविधता के स्तर

आनुवांशिक विविधता

प्रजाति विविधता

पारिस्थितिक विविधता

## महत्वपूर्ण तथ्य

- जैवविविधता एक बहुत महत्वपूर्ण विरासत है जो कृषि, वानिकी पशुधन, मत्स्यपालन एवं सूक्ष्मजीवों आदि के संरक्षण के लिए आवश्यक है।
- भारत देश जैवविविधता के बारे में बहुत सम्पन्न देश है जिसमे पूरे विश्व की 8 प्रतिशत जैवविविधता है।
- भारत की जैवविविधता में 14 प्रतिशत पुष्पण पौधे, 18 प्रतिशत कवक, 15 प्रतिशत पशुधन, 40 प्रतिशत कीट और 13 प्रतिशत अन्य जैवविविधता पायी जाती है।
- भारत पुष्पीय पौधे के मामले में द्वितीय स्थान पर है जिसके अन्तर्गत 15000 पुष्पीय पौधे पाये जाते हैं जो पूरे विश्व के 17 प्रतिशत है।
- भारतीय जैव विविधता में 45000 पादप और 81000 जन्तु प्रजाति है जो पूरे विश्व के पादप प्रजाति है जो पूरे विश्व के पादप प्रजाति का 7 प्रतिशत और जन्तु प्रजाति का 6.5 प्रतिशत है।
- मृदा की संरचना एवं जलवायुवीय परिस्थिति में वृहत विविधता है जो पारिस्थिनीय संतुलन में पूरे विश्व का लगभग 11 प्रतिशत योगदान देता है।

**पारिस्थितिकीय योगदान**

- प्राकृतिक संतुलन
- जैविक उत्पादकता
- जलवायु संतुलन
- अनुपयोगी पदार्थ का विघटन
- जल एवं वायु का शुद्धिकरण
- पोषक तत्वों का चक्रीयकरण
- बिमारियो एवं अन्य हानिकारक कीट पतंगो का नियंत्रण
- मृदा संरक्षण
- जलवायु परिवर्तन को रोकने में सहायक
- मृदा उर्वरकता का संरक्षण

**जैवविविधता संकट – प्राकृतिक कारण**

- भौगोलिक क्षेत्र में कमी
- जीव जन्तु की कम संख्या
- निम्न प्रजनन दर
- प्राकृतिक आपदायें

**मानव जनित कारण**

- आवास में परिवर्तन
- चयनित प्रजातियों का अंधाधुंध उपयोग
- बाहरी प्रजाति द्वारा नवोन्मेष

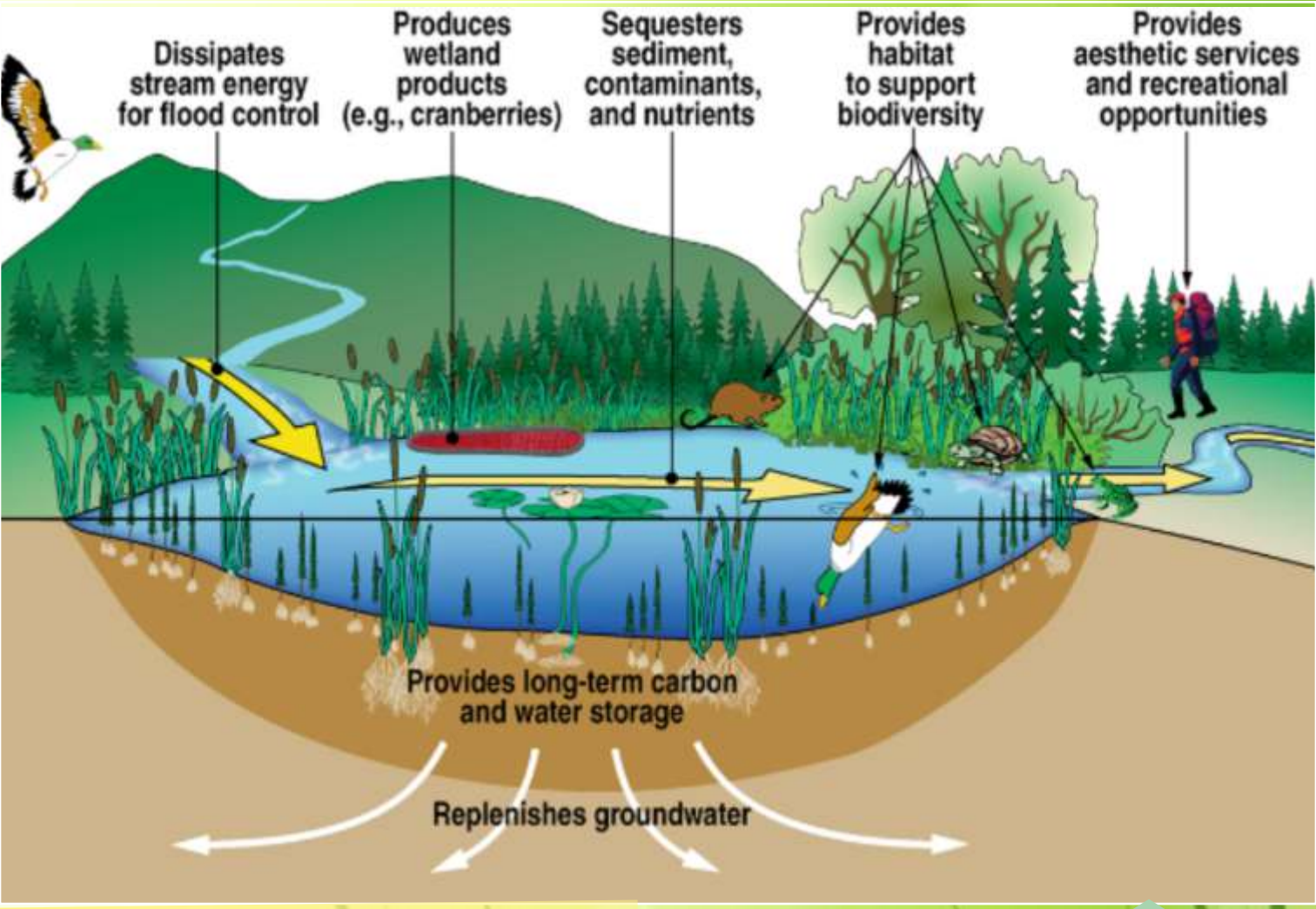

# भारत में जैवविविधता

| श्रेणी | भारतीय प्रजाति की संख्या | भारतीय प्रजाति का मूल्यांकन (%) | संकटीय भारतीय प्रजाति (%) |
|---|---|---|---|
| स्तनधारी | 386 | 59 | 41 |
| पक्षी | 1219 | – | 7 |
| सरीसृप | 495 | 73 | 46 |
| उभयचर | 207 | 79 | 57 |
| ताजे पानी वाली मछलियाँ | 700 | 46 | 70 |

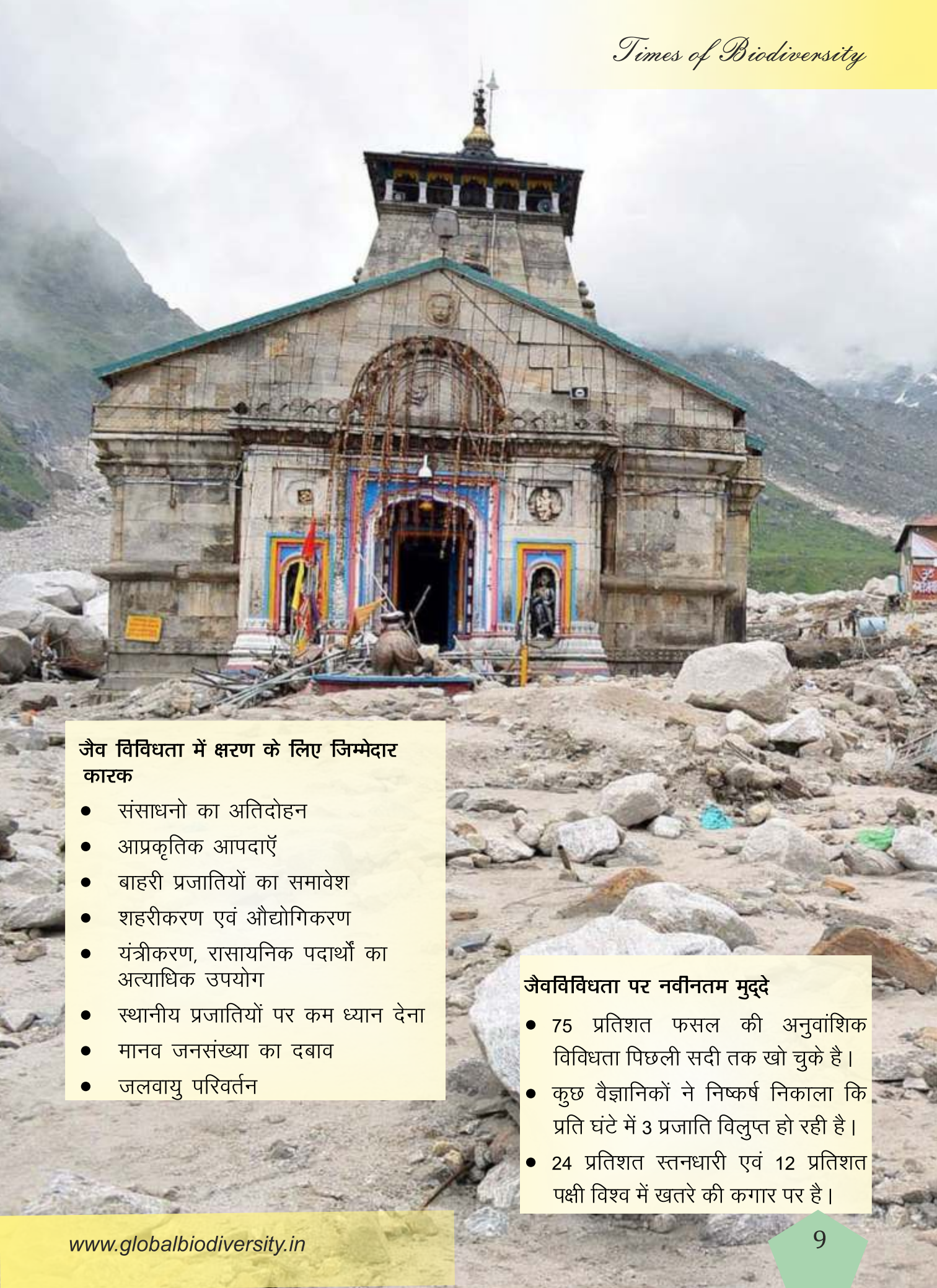

**जैव विविधता में क्षरण के लिए जिम्मेदार कारक**

- संसाधनो का अतिदोहन
- आप्रकृतिक आपदाएँ
- बाहरी प्रजातियों का समावेश
- शहरीकरण एवं औद्योगिकरण
- यंत्रीकरण, रासायनिक पदार्थों का अत्याधिक उपयोग
- स्थानीय प्रजातियों पर कम ध्यान देना
- मानव जनसंख्या का दबाव
- जलवायु परिवर्तन

**जैवविविधता पर नवीनतम मुद्दे**

- 75 प्रतिशत फसल की अनुवांशिक विविधता पिछली सदी तक खो चुके है।
- कुछ वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला कि प्रति घंटे में 3 प्रजाति विलुप्त हो रही है।
- 24 प्रतिशत स्तनधारी एवं 12 प्रतिशत पक्षी विश्व में खतरे की कगार पर है।

**जैवविविधता का संरक्षण**

- जैवविविधता को सूचिबद्ध करना
- जैवविविधता को सुरक्षित आवास में संरक्षित करना
- इन सिटु संरक्षण
- एक्स सिटु संरक्षण
- बीज बैंक, जीन बैड परागकन बैंक बनाना
- जैवविविधता की मरम्मत करना

**वातावरणीय विधान को अभिनीत, सुदृढ़ एवं लागू करना**

- जनसंख्या नियंत्रण
- कृषिगत पद्धतियों में बदलाव
- शहरीकरण के बढ़ते प्रभाव पर नियंत्रण
- जैवतकनीक के माध्यम से संरक्षण

**कृषक के अधिकार एवं संरक्षक के रूप में**

- बीज एवं पंजीकृत किस्मो को बचाना, उपयोग करना, बोना, बाटना और बेचना।
- कृषक लाभांश देना यदि उनकी किस्मो का उपयोग प्रजनन या नई किस्म के लिए उपयोग किया गया है।
- कृषक समुदाय को संरक्षण के लिए पुरस्कृत करना
- पंजीकृत किस्म का उचित मूल्य पर पर्याप्त मात्रा में बीज प्राप्त करना।
- कृषक द्वारा निकाली गई किस्म का पंजीकरण।

**मध्यप्रदेश की जैवविविधता में अनोखी पहचान – संरक्षण की आवश्यकता**

- चिन्नौर धान – बालाघाट जिले में मुख्यतः होने वाली धान की किस्म छोटे साइज एवं महक इसकी पहचान,
- अरहर की दाल– नरसिंहपुर जिले की अरहर दाल खाद्य की दृष्टि से अद्वितीय,
- सागर खुरई का गेहूं की प्रसिद्धि पूरे विश्व में,
- औषधीय जैव संपदा,
- नरसिंहपुर का चना,
- जबलपुर का मटर,
- भिण्ड, मुरैना की सरसो,
- डिंडोरी, मण्डला की कोदो कुटकी,
- सुंदरजा आम, रीवा की किस्म,
- होशंगाबाद का सागौन,
- सफेद टाइगर रीवा,
- झाबुआ की कड़कनाथ मुर्गी की किस्म,
- अनूपपुर की लाख,
- तेंदूपत्ता,
- चिरौंजी,
- महुआ इत्यादि प्रमुख है।

# प्रदेश में जैव विविधता को बढ़ावा देने की नई पहल

## पहली बार राज्य स्तरीय जैव विविधता पुरस्कार वितरित

सुनीता दुबे
जनसम्पर्क, संचालनालय

अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर राज्य जैव विविधता बोर्ड ने जैव विविधता संरक्षण को प्रोत्साहन देने की नई पहल की है। बोर्ड ने आज इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य कर रहे शासकीय/अशासकीय संस्थान, व्यक्ति और जैव विविधता वाले विभागों को राज्य स्तरीय वार्षिक जैव विविधता पुरस्कार योजना–2018 के तहत पुरस्कृत किया। अपर मुख्य सचिव वन श्री के.के. सिंह के मुख्य आतिथ्य में हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री रवि श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम का संचालन बोर्ड के सदस्य सचिव श्री आर श्रीनिवास मूर्ति ने किया।

**एक छात्र एक पौधा लगायें अभियान के पं. उदित नारायण शर्मा पुरस्कृत**

व्यक्तिगत श्रेणी में छिन्दवाड़ा के राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित सेवा निवृत्त शिक्षक पं. उदित नारायण शर्मा को प्रथम पुरस्कार के रूप में 3 लाख रूपये, प्रशस्ति पत्र और ट्रॉफी से पुरस्कृत किया गया। श्री शर्मा पिछले 38 सालों से एक छात्र एक पौधा लगाये अभियान का संचालन कर रहे हैं। स्कूली छात्र–छात्राओं में पर्यावरण जैव विविधता एवं जल संरक्षण जागरूकता के लिये वह अनवरत कार्य कर रहे हैं। उन्होंने हरियाली गीत माला की भी रचना की है।

## राज्य मछली महाशीर संरक्षण– कृत्रिम प्रजनन के लिये बड़वाह पुरस्कृत

शासकीय संस्थागत श्रेणी में खरगौन जिले के वन मण्डल बड़वाह को मध्यप्रदेश की राज्य मछली महाशीर के संरक्षण एवं संवर्धन कर कृत्रिम प्रजनन द्वारा संख्या बढ़ाने के लिये द्वितीय पुरस्कार दिया गया।

## डॉ. डी.पी. कनोजिया ने भोपाल में विकसित किया वन

व्यक्तिगत श्रेणी में डॉ. डी. पी. कनोजिया को भोपाल की आवासीय कालोनी रचना नगर में साल, सागौन, शीशम, हर्रा, बहेड़ा, अचार, महुआ, गूलर, पाखर, पीपल, नीम आदि के 60 से अधिक पौधे रोपने के लिये 2 लाख रूपये के द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डॉ. कनोजिया पौधों से वृक्ष में तब्दील हो चुके पेड़ों की पिछले 20 सालों से नियमित सिंचाई और सुरक्षा कर रहे हैं।

## जागरूकता कार्यों के लिये मटकुली की जैवविविधता प्रबंधन समिति पुरस्कृत

जैव विविधता प्रबंधन समिति श्रेणी में एक लाख रूपये का पुरस्कार होशंगाबाद जिले की जैव विविधता प्रबंधन समिति मटकुली को दिया गया। समिति द्वारा जैव विविधता से आजीविका को जोड़ते हुए लेंटाना से फर्नीचर निर्माण, पॉलीथीन के स्थान पर नॉन वोवेन बेग बढ़ावा देने, पौधरोपण, गर्मियों में पक्षियों के लिये दाना–पानी इंतजाम और जैव विविधता संरक्षण के प्रति जागरूकता के काम किये जा रहे है।

**खरगौन के आस्था ग्राम ट्रस्ट को 3 लाख रूपये का प्रथम पुरस्कार**

अशासकीय संस्थागत श्रेणी में खरगौन के आस्था ग्राम ट्रस्ट को 3 लाख रूपये प्रशंसा पत्र और ट्रॉफी से पुरस्कृत किया गया। ट्रस्ट वर्ष 1999 से बारह एकड़ बंजर भूमि पर वृक्षारोपण, वॉटरशेड प्रबंधन, जैविक खेती, ड्रिप इरीगेशन और केचुआ खाद निर्माण कर जैव विविधता से भरपूर क्षेत्र का विकास कर रहा है। ट्रस्ट ने क्षेत्र में जैव संसाधनों के संवहनीय उपयोग के लिये विविध प्रयास किये हैं।

**मुरैना की सुजाग्रति समाजसेवी संस्था को द्वितीय पुरस्कार**

अशासकीय संस्थागत क्षेणी में दो लाख रूपये का द्वितीय पुरस्कार मुरैना के सुजाग्रति समाज सेवी संस्था को दिया गया। संस्था पिछले 15 सालों से जैव विविधता संरक्षण, संवर्धन, वृक्षारोपण के साथ विशेष रूप से चम्बल क्षेत्र में संकटग्रस्त औषधीय प्रजाति गुग्गुल के संरक्षण और संवर्धन के कार्य कर रही हैं।

## पर्यावरण की अदभुत चित्रकारी करने वाले विद्यार्थी पुरस्कृत

बोर्ड द्वारा जैव विविधता संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति स्कूल–कॉलेज के छात्र–छात्राओं को जागरूक करने के लिये गत् 12 मई को जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता एवं मानव अस्तित्व विषय पर चार श्रेणी में चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। कक्षा 1 से 5 तक की श्रेणी में शीतल गुप्ता, निरंजन थापा और तनीषा डोंगरे को क्रमशरू प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार दिया गया। कक्षा 6 से 8 तक की श्रेणी में कार्तिक शर्मा को प्रथम, प्रियल जैन को द्वितीय, मीत चावला को तृतीय, कक्षा 9 से 12 तक श्रेणी में रिचा शाक्य को प्रथम अन्तरिक्ष सेठिया को द्वितीय और आयुष विश्वकर्मा को तृतीय पुरस्कार दिया गया। कक्षा 12 से ऊपर की श्रेणी में विजय गहरवार को पहला, साबिर हलीम को दूसरा और शुभम वर्मा को तीसरा पुरस्कार मिला।

अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के 25 साल पूरे होने पर इस बार संयुक्त राष्ट्र के निर्णयानुसार 25 साल – जैविक विविधता सम्मेलन – पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा के रूप में मनाया जा रहा है। प्रदेश में इस अवसर पर कार्यशाला, सेमिनार, बैठक और जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रधान मुख्य संरक्षक श्री शाहबाज अहमद, श्री राजेश श्रीवास्तव, श्री एम. के. सप्रा, श्री जे.के. मोहन्ती, श्री सुधीर कुमार, भारतीय वन प्रबंधन संस्थान के निर्देशक डॉ. पंकज श्रीवास्तव सहित विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि और विद्यार्थी उपस्थित थे। आभार डॉ. बकुल लाड ने प्रकट किया।

# जैवविविधता संरक्षण एवं संवहनीय उपयोग एक संकल्प

डॉ. एस.डी. उपाध्याय
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
वानिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय, जबलपुर

वानिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर द्वारा दिनांक 22 मई 2018 को मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल के सौजन्य एवं वित्तीय सहयोग से एक दिवसीय जैवविविधता पर जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. प्रमोद कुमार शुक्ला, क्षेत्रीय निदेशक (क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र) राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली, विशिष्ट अतिथि, डॉ. जी. राजेश्वर राव, निदेशक, उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा, निदेशक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा, अधिष्ठाता कृषि संकाय, ज.ने.कृ.वि.वि, जबलपुर, डॉ. धीरेन्द्र खरे, संचालक शिक्षण एवं अनुसंधान, ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर, डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता, संचालक विस्तार सेवायें, ज.ने.कृ.वि.वि.,जबलपुर एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति, ज.ने.कृ.वि.वि.,जबलपुर डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन जी द्वारा की गई।

इस अवसर पर कुल 246 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग लिया जिनमें 96 छात्र–छात्राऐं, 51 किसान, 67 वैज्ञानिक एवं शोध कार्यों से जुड़े व्यक्ति, 17 वन विभाग एवं 15 अन्य विभागों से प्रतियोगी सम्मलित हुये। मुख्य रूप से सभी अतिथियों ने अपने उद्‌बोधन द्वारा वर्तमान परिपेक्ष में जैवविविधता के संरक्षण पर जोर डालते हुये उसके भविष्य में पड़ने वाले प्रभावों का उल्लेख किया जिसमें अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय डॉ. आर.एम.साहू ने स्वागत भाषण दिया उन्होने भारत में वर्तमान में विभिन्न जीवों की स्थिति को बताते

हुये जैवविविधता के संरक्षण पर प्रकाश डाला विशिष्ट अतिथि डॉ. जी.राजेश्वर राव, निदेशक, उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने बताया कि वर्तमान में 125 करोड़ भारतीयों के लिये भोजन की पैदावार की ज्यादा आवश्यकता है जिसमें हम सिर्फ उन्ही फसलों का जैवविविधता के रूप में संरक्षण करें जिनको हम भोजन के रूप में ज्यादा उपयोग करते है।

इसी क्रम में राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के निदेशक डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा ने कहा कि जनसंख्या विस्फोट के चलते हम क्षमता से चार गुना अधिक हो चुके है। इसलिए जैव विविधता का संरक्षण बहुत जरूरी हो गया है। डॉ. धीरेन्द्र खरे, संचालक शिक्षण एवं अनुसंधान, ज.ने.कृ.वि.वि.,जबलपुर ने भारत की अपूर्व जैवविविधता का उल्लेख करते हुये उसकी उपयोगिता को विस्तार से समझाया एवं वर्तमान में नई उपयोगी प्रजातियों के विकास में उनका क्या योगदान है इस पर भी विस्तार से जानकारी दी। डॉ. श्रीमति ओम गुप्ता, संचालक विस्तार सेवायें, ज.ने.कृ.वि.वि.,जबलपुर ने कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा विलुप्त प्रजातियों के संरक्षण एवं उत्पादन पर प्रकाश डाला। कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उल्लेख किया कि जैव विविधता का संरक्षण करना भारत की पौराणिक संस्कृति है, इसलिए भारत को देवभूमि कहा जाता है।

प्रकृति का दोहन और उपयोग करने के साथ–साथ भावी पीढ़ी के लिए उसका संरक्षण करना भी जरूरी है, क्योंकि हम प्रकृति के मालिक नहीं संरक्षक है। संरक्षण के लिए अनुसंधान के मार्ग को प्रशस्त करना होगा। जैव विविधता के क्षेत्र में भारत समृद्धशाली है। यहां सर्वत्र जैवविविधता बिखरी हुई है। भारत में 47 हजार प्रजातियां, 39 हजार जीवन और 8 हजार किलोमीटर समुद्र तट के साथ हिमालय जैसे गगनचुम्बी पर्वत है। वैज्ञानिक विधि से इनके संरक्षण की महती आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड नई दिल्ली के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. प्रमोद कुमार शुक्ला ने कहा कि जैव विविधता और जनसंख्या में संतुलन स्थापित करना निहायत जरूरी है। विगत 10 वर्षों में उपभोक्तावादी संस्कृति, प्रदूषण, तापमान में वृद्धि और तेज गति से बढ़ रही जनसंख्या ने इस गणित को गड़बड़ा दिया है।

वानिकी विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस.डी.उपाध्याय ने बताया कि जैव विविधता जीवन और विविधता के संयोग से निर्मित शब्द है। बायोडायवर्सिटी विशेषः अनुवांशिकी, प्रजाति तथा परिस्थितिकी तंत्र के विविधता का स्वर मापता है। जैव विविधता की समृद्धि, जलवायु और क्षेत्र पर निर्भर करती है। कार्यक्रम में डॉ. राकेश बाजपेई, प्राध्यापक, वानिकी विभाग द्वारा धन्यवाद भाषण दिया गया। इस दौरान अतिथियों को कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा निर्मित जैविक गुड एवं शहद़ भेट किया गया। वहीं बी.एस.सी. वानिकी के नवीन पाठ्यक्रम एवं वानिकी कार्य अनुभव के मैनुअल का विमोचन किया गया और मध्यप्रदेश हेतु किनोवा फसल (बथुआ की एक प्रजाति) लाँच की गई। साथ ही तकनीकी सत्र में बांस की खेती हर मेड़ पर पेड़, कृषकों द्वारा चिन्हित प्रजातियों के अधिकार पर विशेष चर्चा की गई। कार्यक्रम के अंत में छात्र–छात्राओं द्वारा चित्रित पोस्टर्स एवं किसानो द्वारा प्रदर्शित विभिन्न जैवविधता से संबंधित फसलों के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। अन्त में सभी प्रतिभागियों ने जैवविविधता संरक्षण एवं संवहनीय उपयोग हेतु संकल्प लिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में वानिकी विभाग के समस्त अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का विशेष सहयोग रहा।

## World Environment Conference

# Save Nature Save Future

**5-7 June 2018**
**Pragati Maidan, New Delhi (India)**

## Theme

**Editor's Desk**

**World Environment Conference (WEC 18)** will Provide opportunity for communication on technology and information exchange in environmental protection industry as well as provide the excellent platform for environmental protection enterprises across the globe. Theme of the mega event will be **Go Green** with the main topics Environment Protection, Climate Change, Carbon emissions saving the energy and natural resources. (WEC 18) presents a global networking opportunity with policy makers, researchers, academicians, Govt. officials, NGO, Trade Association, Environmentalists Municipalities, Development Authorities, Civil Societies and industrialists.

D.P. Tiwari Managing Director Global Biodiversity Education Society has given power point presentation on Biodiversity and livelihood. In power point presentation the topic covered was floral, faunal, domestic animal, fisheries & Horticulture Biodiversity with reference to Madhya Pradesh. In detailed discussion various sectors has been clarified regarding forest biodiversity, Agro biodiversity and there uses and importance for human life.

**Conference Agenda**

- Pollution Control Air, Water, Ocean
- Climate Change, Carbon emissions
- Energy Efficiency, Natural Resources, Green Innovation
- Clean and Green Energy
- Smart Cities, Green Building, Sustainable Development
- Waste Management, Sanitation, Recycling
- Water Conservation, Ganga Rejuvenation and River Cleaning
- Wild Life, Plant and Forest Conservation
- Bio Diversity
- Electric Vehicle Mobility
- Environmental Safety and Health
- Trade and Environment
- Environment Laws in India

# Green India Award, 2018

On the Closing ceremony of the conference green India Award 2018 was announced by the organizer, which has been given to various persons, NGO's, Institutions, organizations and industries which are working for the conservation of environment.

Global Biodiversity Education Society is nominated and felicitated for work **"Green Education & Training provider of the year 2017-18".** A trophy of award has been given to D.P. Tiwari, Managing Director, Global Biodiversity Education Society, Bhopal.

## गाय की देशी नस्लों का संरक्षण एवं उसकी ग्रामीण विकास में भूमिका

# जैवविविधता संरक्षण के सारथी

### अनुभव सहभाजन

श्री ओंकार सिंह राणा
से.नि. उप वन संरक्षक

माह अप्रैल 2018 में, मैं अपने शहर, मेरठ गया था, वहां मेरे छोटे भाई श्री ओ.डी. राजपूत ने अपने किरायेदार से परिचय कराया। भाई ने बताया कि ये शुद्ध गाय का दूध विक्रय करते हैं। किरायेदार का नाम श्री भानुप्रताप सिंह चौहान है। मैने उनसे गायों के बारे में पूछा कि क्या आप जर्सी गाय पालते हैं या देशी गाय। उसने बताया कि मेरे पास देशी नस्ल की गायें हैं। जिनमें साहिवाल, कांकरेज, राठी एवं गंगात्री (कोसी) नस्ल मैने पाल रखी हैं और इन्हीं गायों का दूध, मैं बेच रहा हूँ।

श्री भानूप्रताप सिंह चौहान ग्राम पचगांव के रहने वाले हैं। यह गांव मेरठ से गढमुक्तेश्वर रोड़ पर स्थित सिसोली गांव से लगभग दो कि.मी. अन्दर हैं। श्री चौहान समृद्ध किसान परिवार के सदस्य हैं पर उन्होने 17 वर्ष तक भारतीय थल सेना में अपनी सेवायें दी हैं। सेना से ही इन्हें मिलिटरी फार्म से साहिवाल गाय पालने के बारे में जानकारी मिली सो सेवानिवृत्ति लेने के बाद इन्हें देशी नस्ल की गाय पालने तथा इनका दूध विक्रय करने का विचार आया। इन्होने अपनी सेवानिवृत्ति की राशि से देशी नस्ल की गाय खरीदकर, गाय फार्म गांव में ही विकसित किया। शहर में गाय के दूध की कमी को देखते हुए इन्होने मेरठ शहर में गाय के शुद्ध दूध के विक्रय की योजना बनाई। इन्होने मेरठ के शास्त्रीनगर सेक्टर 9 में एक दुकान किराये पर ले रखी है। इसी दुकान से ये गाय का शुद्ध दूध व गाय का घी, दही व छाछ का विक्रय कर रहे है। इन्हें गाय की देशी नस्ल पालने का अनुभव लगभग 3–4 साल का हो गया है। इनके पास देशी गाय की 4 नस्ले हैं परन्तु इन्हें साहिवाल नस्ल अधिक रास आ रही है।

देसी नस्ल के गायक पालक
श्री भानु प्रताप सिंह चौहान

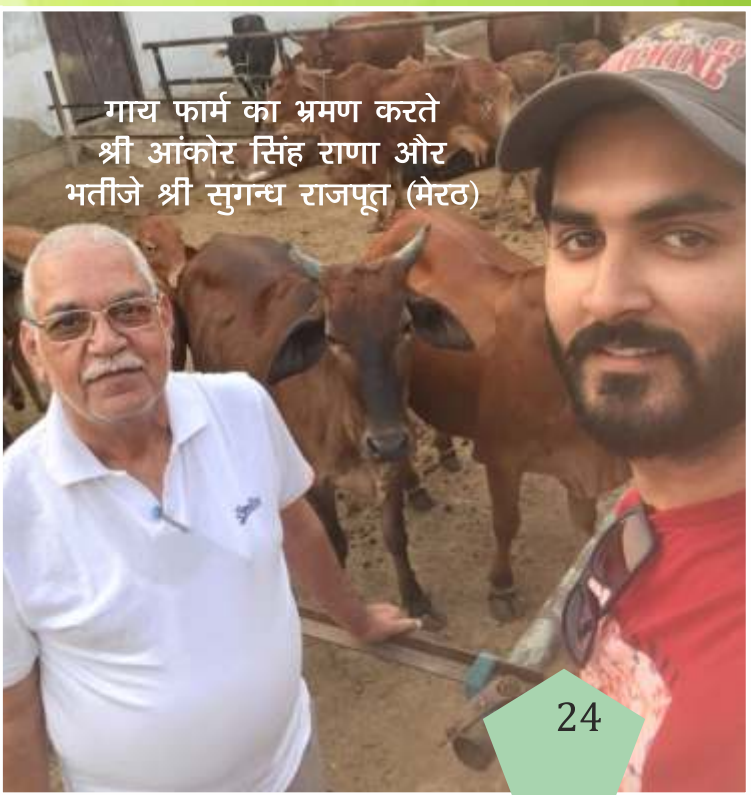

गाय फार्म का भ्रमण करते
श्री आंकोर सिंह राणा और
भतीजे श्री सुगन्ध राजपूत (मेरठ)

अतः अब ये साहिवाल नस्ल पर ही अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। ये साहिवाल नस्ल का ही सांड पाले हुए हैं जिसकी दो पीढी अभी इनके पास हैं।

देशी नस्ल की गायों व सांड को इन्होने फाजिल्का अबोहर (पाकिस्तान बार्डर) से तथा श्री गंगानगर से खरीदा है। पाकिस्तान में साहिवाल नाम का एक गांव है, उसी गांव के नाम पर इस नस्ल का नाम पडा है। इनका साहिवाल नस्ल के प्रति जुनून ही था जो इतनी दूर से इतना महंगा परिवहन खर्च वहन करके गायों को अपने गाय फार्म तक गांव में लाये। श्री चौहान बताते हैं कि साहिवाल गाय फार्म स्थापित करने में लगभग 30 लाख रूपये लागत आई। इनका सारा फण्ड इसी कार्य में खर्च हो गया।

काकरेज नस्ल की गाय

गंगात्रि (कोसी) नस्ल

उत्सुकतावश मैने दिनांक 10 मई 2018 को इनके गांव जाकर साहिवाल व अन्य देशी गाय की नस्लों को देखा तथा गायों के बारे में जानकारी एकत्र की।

श्री चौहान ने बताया कि कांकरेज, राठी तथा कोसी नस्ल से भी साहिवाल सांड द्वारा साहिवाल नस्ल तैयार की जा रही है। अभी दूसरी पीढी जन्मी है। अब तीसरी पीढी जन्मेगी तो वे भी शुद्ध साहिवाल ब्रीड होगी। वर्तमान में इनके गाय फार्म में 22 गाय तथा 13 बछिया तथा एक साहिवाल नस्ल का सांड है। दूसरा सांड भी तैयार किया जा रहा है जो तीन साल बाद तैयार होगा।

साहिवाल नस्ल की गाय

साहिवाल नस्ल का साँड़

**नस्लवार वर्तमान में दूध उत्पादन एवं दुग्ध काल**

| नस्ल | दूध उत्पादन | दुग्ध काल |
|---|---|---|
| साहिवाल | 8 से 10 कि.ग्रा. प्रतिदिन | दुग्ध काल 300 दिन |
| कांकरेज | 8 कि.ग्रा. प्रतिदिन | दुग्ध काल 300 दिन |
| राठी | 6 से 8 कि.ग्रा. प्रतिदिन | दुग्ध काल 300 दिन |
| कोसी | 6 कि.ग्रा. प्रतिदिन | दुग्ध काल 300 दिन |

सभी गायों से वर्तमान में लगभग 170 कि.ग्रा. दूध प्रतिदिन प्राप्त हो जाता है जो सब का सब विक्रय हो जाता है, अभी मांग पूरी नहीं कर पा रहे हैं।

साहिवाल नस्ल के दूध की मात्रा बढ़ाने के प्रयास किये जा रहे हैं। गायों को पौष्टिक आहार, हरा चारा, सूखा चारा, खली, चुन्नी (चोकर), बिनौला तथा सरसों का तेल, मौसम के अनुसार खिलाया जाता है। साहिवाल से 11 से 15 कि.ग्रा. दूध प्रतिदिन प्राप्त करने के लिए साहिवाल की अगली उन्नत नस्ल तैयार की जा रही है। गाय हर 21 दिन बाद ऋतुमति होती है इसका गर्भकाल 280 दिन का होता है।

राठी नस्ल की गाय

भविष्य का साँड़ (साहिवाल)

## गायों को दी जाने वाली प्रतिदिन की खुराक

| सभी गायों को प्रतिदिन (दूध न देने वाली गायों हेतु) | दूध देने वाली गायों को प्रतिदिन |
|---|---|
| 15 कि.ग्रा. हरा चारा, | 15 कि.ग्रा. हरा चारा, |
| 05 कि.ग्रा. सूखा चारा (भूसा) | 05 कि.ग्रा. सूखा चारा (भूसा) |
| 1.5 कि.ग्रा पौष्टिक आहार | 05 कि.ग्रा पौष्टिक आहार |

चारा काटने की मशीन

सरसों की खली

गेहूँ की भूसी

बिनोला

## गायों को दी जाने वाली प्रतिदिन की खुराक

**बछिया हेतु**

02 कि.ग्रा. हरा चारा,
02 कि.ग्रा. सूखा चारा (भूसा)
02 कि.ग्रा पौष्टिक आहार

**ग्याभन (गर्भिणी) गाय को प्रतिदिन (6 वें माह तक)**

15 कि.ग्रा. हरा चारा,
05 कि.ग्रा. सूखा चारा (भूसा)
1.5 कि.ग्रा पौष्टिक आहार

**6 वें माह के बाद**

15 कि.ग्रा. हरा चारा,
05 कि.ग्रा. सूखा चारा (भूसा)
02 कि.ग्रा पौष्टिक आहार

सर्दी में चारे को
इस कड़ाही में गरम करके खिलाते हैं

विभिन्न दालों व अनाजों
से बना पोस्टिक आहार

ठण्ड के दिनों में बिनौला खिलाते हैं तथा सप्ताह में एक बार एक पाव सरसों का तेल पिलाते हैं।

मेरे द्वारा श्री चौहान को सुझाया गया कि गायो के आहार में चन्द्रशूर/हालो को 250 ग्राम प्रति गाय के हिसाब से खिलाया जाये, इससे गायों के दूध में वृद्धि होगी। जब चारे का मिश्रण बनाया जाता है तो उसमें एक क्विंटल चारे में एक कि.ग्रा. नमक मिलाते हैं। 4–5 कि.ग्रा. नमक एक अलग नांद में डाल देते हैं। जिस गाय को और नमक खाना होता है वह वहां से चाट लेती है।

श्री चौहान ने बताया कि गाय के दूध मे प्राकृतिक रूप से जितनी वसा (Fat) पाई जाती है, मानव शरीर को उतनी ही वसा की जरूरत होती है। साहिवाल गाय में 45–50 की मात्रा में वसा होती है। जैसे–जैसे गाय में दूध की मात्रा कम होती जाती है वैसे–वैसे दूध में वसा (चर्बी) की मात्रा भी बढती जाती है।

दूध का केन

तोल मशीन

श्री चौहान गाय के दूध व दूध उत्पाद के साथ ही गाय का मूत्र बेचते हैं और गौ–मूत्र का अर्क निकाल कर भी बेचते हैं। इन्होने बताया कि ये बछडे किसी जरूरत मंद को दे देते हैं सिर्फ बछिया को पालते हैं।

मेरठ के डेयरी लेबोरेट्री में श्री भानुप्रताप सिंह चौहान के साहिवाल गाय फार्म का दूध शहर में सबसे श्रेष्ठ पाया जाता है। श्री चौहान बताते हैं कि कांकरेज नस्ल की गाय के दूध में अन्य गायों के दूध के मुकाबले कैल्शियम अधिक पाया जाता है। देशी गाय अपने सींग से ब्रह्याण्ड से ऊर्जा लेती है तथा इसकी टाट (गर्दन के ऊपर कूबड) में सूर्य–केतु नाडी होती है जिसके कारण इसके दूध में कैरोटिन नामक पदार्थ पाया जाता है।

## गाय दूध उत्पादन की आर्थिकी

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | कुल दूध उत्पादन | – | 170 कि.ग्रा. प्रतिदिन |
| 2 | विक्रयदर | – | 52/– प्रति कि.ग्रा. |
| 3 | कुल प्राप्त मूल्य | – | 170 X 52 = 8840 प्रतिदिन |
| 4 | कुल खर्च (बिजली, चारा, पौष्टिक आहार, मजदूरी, परिवहन व्यय, भवन किराया आदि) | – | लगभग 40/– प्रति कि.ग्रा. प्रतिदिन |
| 5 | शुद्ध लाभ | | 12X170 = 2040 /– प्रतिदिन |

**भविष्य में ''साहिवाल दूध'' नाम के ब्रांड के अन्तर्गत दूध विक्रय करने की इनकी योजना है।**

**देशी नस्लों के संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य को करने वाले श्री भानूप्रताप सिंह चौहान बधाई के हकदार हैं। आशा है इनसे अन्य लोग भी प्रेरित होंगे।**

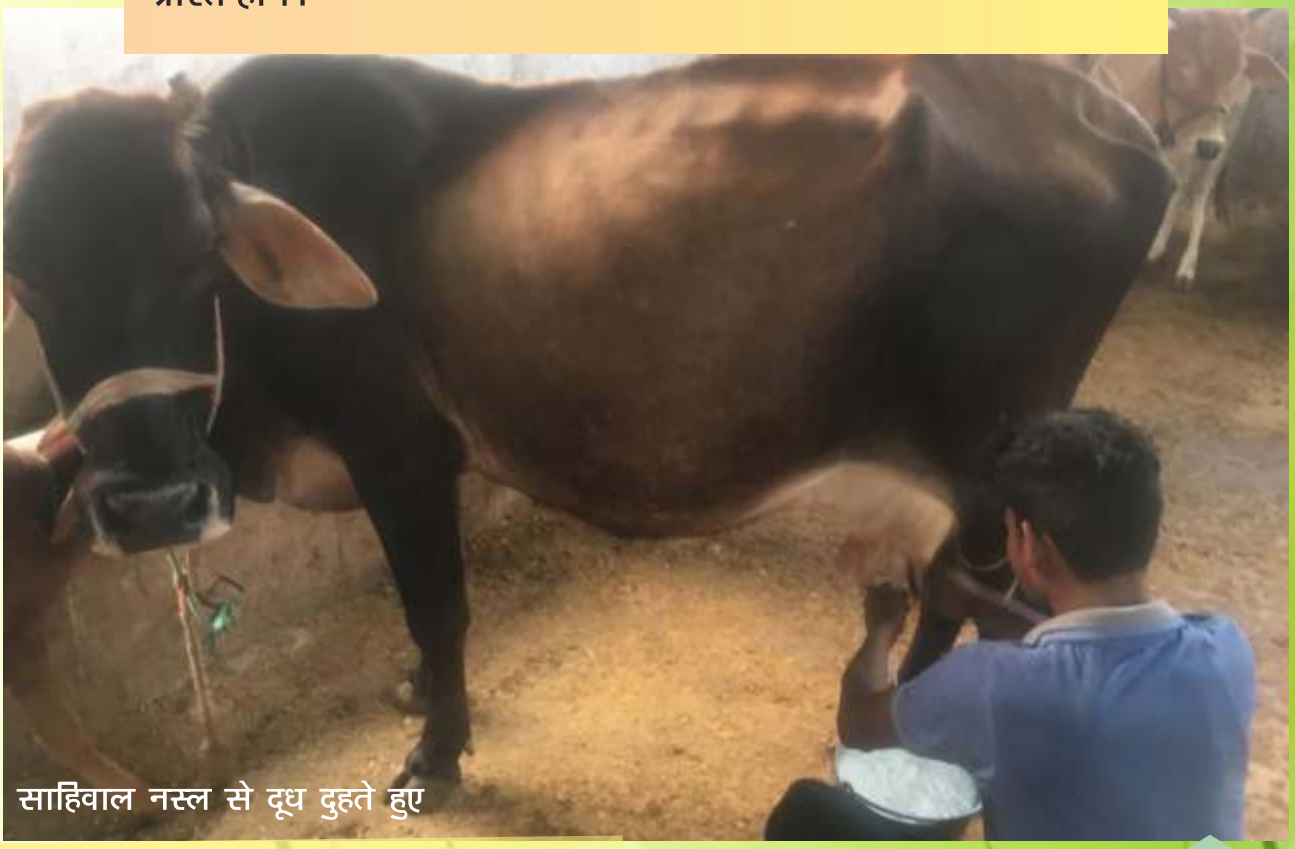

साहिवाल नस्ल से दूध दुहते हुए

ग्लोबल बायोडायवर्सिटी एजुकेशन सोसायटी की पहल

# वरिष्ठ नागरिको की शहरी पर्यावरण सुधार में भूमिका

## चाणक्यपुरी रहवासी मोहल्ला कल्याण समिति

## विश्व पर्यावरण दिवस

एम. के. श्रीवास्तव
उप. वन संरक्षक (से.नि.)

संस्था ग्लोबल बायोडायवर्सिटी एजुकेशन सोसायटी द्वारा चाणक्यपुरी रहवासी मोहल्ला कल्याण समिति के सहयोग से ''विश्व पर्यावरण दिवस'' 05 जून 2018 का आयोजन सामुदायिक भवन चाणक्यपुरी चूना भट्टी भोपाल में किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य वरिष्ठ नागरिको को शहरी पर्यावरण के सुधार, स्वयं के उपयोग हेतु किचिन गार्डन का निर्माण एवं स्वस्थ्य जीवन शैली के साथ–साथ अन्य कार्यो हेतु नवयुवको एवं बच्चो को जागरूक एवं प्रशिक्षित किया जाये।

आयोजन के पूर्व दिनांक 03 जून 2018 को चाणक्यपुरी रहवासी मोहल्ला समिति के बच्चों के मध्य चित्रकला एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन श्री एम.के. श्रीवास्तव कार्यकारी संचालक ग्लोबल बायोडायवर्सिटी एजुकेशन सोसायटी के मार्गदर्शन में किया गया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विजेता

श्री डीपी तिवारी द्वारा बताया गया कि पर्यावरण को हम कैसें संरक्षित कर सकते है और हमारे भविष्य की पीढी के लिए पर्यावरण को बचाना कितना जरूरी है।

विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून 2018 के अवसर पर चाणक्यपुरी रहवासी मोहल्ला कल्याण समिति के उपस्थित सभी माननीयगण एवं योगाचार्यो ने अपने व्याख्यान दिये एवं पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को आगे बढाने का संकल्प लिया।

बच्चो को उसी समय पुरस्कृत किया गया एवं चित्रकला प्रतियोगिता में विजेता छात्र छात्राओं को ''विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून 2018'' के अवसर पर पुरूस्कृत किया गया। दिनांक 03 जून 2018 को पर्यावरण के विभिन्न मदो को समझाते हुए संस्था के प्रबंध संचालक

संस्था द्वारा इस अवसर पर पौधारोपण कार्यक्रम, किचन गार्डन हेतु बीज वितरण, एवं औषधीय एवं धार्मिक पौध वितरण कार्यक्रम भी किये गये। संस्था द्वारा सभी माननीय गण को पौधो का निःशुल्क वितरण भी किया गया। पुरस्कार वितरण एवं पौध वितरण माननीय श्री व्ही.आर.खरे प्रधान मुख्य वन संरक्षक म.प्र. (से. नि.) एवं रहवासी गृह निर्माण संस्था के अध्यक्ष क्रमशः श्री बी.एम. सिंह एवं श्री मोहन केकरे, संस्था के सचिव श्री विजय वर्गीय द्वारा किया गया।

संस्था के कार्यकारी संचालक श्री एम.के. श्रीवास्तव सह–संपादक टाईम्स ऑफ बायोडायवर्सिटी द्वारा समस्त उपस्थित नागरिको को अवगत कराया गया कि संस्था निम्न कार्यो हेतु निःशुल्क तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करेगीः–

- रूफटॉप किचिन गार्डन
- टेरिस गार्डन
- गार्डन
- किचिन गार्डन
- वृक्षारोपण (कॉलोनी में व्यक्तिगत उद्यान, फार्म हाऊस, कृषि भूमि एवं सार्वजनिक उद्यान) तथा योग व स्वास्थ्य जागरूकता के लिए कार्यक्रम, शिविर तथा प्रशिक्षण समय–समय पर आयोजित करेगी। उपरोक्त सभी कार्यक्रम चूनाभट्टी स्थित सभी रहवासी कॉलोनी से आरम्भ कर शहर के अन्य क्षेत्रो मे आयोजित करेगी।

कार्यक्रम समाप्ति पर संस्था के कार्यकारी संचालक श्री एम.के. श्रीवास्तव द्वारा आयोजन में उपस्थित सभी रहवासीगण एवं अतिथिगण का आभार व्यक्त किया गया।

## प्रकृति की अद्भुत संरचना

# गर्म पानी के झरने

## (Hot Water Springs)

जे.पी. श्रीवास्तव
उप वन संरक्षक (से.नि.)

प्रकृति के अद्भुत आश्चर्यों में अक्सर गर्म पानी के स्रोतों को ईश्वरीय चमत्कार मान कर हम इनकी चर्चा करते हैं, और क्यूँ ना हो, जब हम हिमालय की गोद में बर्फीले पानी की ठिठुराने वाली ठंडी नदियों के किनारे गर्म पानी के झरने को देखते है तो आश्चर्य स्वाभाविक ही है। अपने हिमांचल प्रदेश और सिक्किम की यात्राओं के दौरान कुछ ऐसे ही स्थानों के भ्रमण का अवसर मिला जिसे मैं आपके साथ शेयर करना चाहता हूँ।

वास्तव में गर्म पानी के झरने प्राकृतिक विशेषताएं हैं। गर्म और भू–तापीय ताकतों द्वारा पृथ्वी की सतह पर लाया गया, गर्म पानी अक्सर पूल, गीजर और फ्यूमरोल का रूप लेते हैं। इन प्राकृतिक गर्म झरनों में विघटित रसायनों और खनिज होते हैं, जो मानव शरीर के लिए फायदेमंद पाए जाते हैं और ये महान औषधीय मूल्य रखते हैं। औषधीय मूल्य के अलावा, भारत में इन गर्म झरनों को आस्था और श्रद्धा से जोड़ दिया गया है। इनमें स्नान करना और आनंद लेना वास्तव में एक अद्भुत अनुभव है।

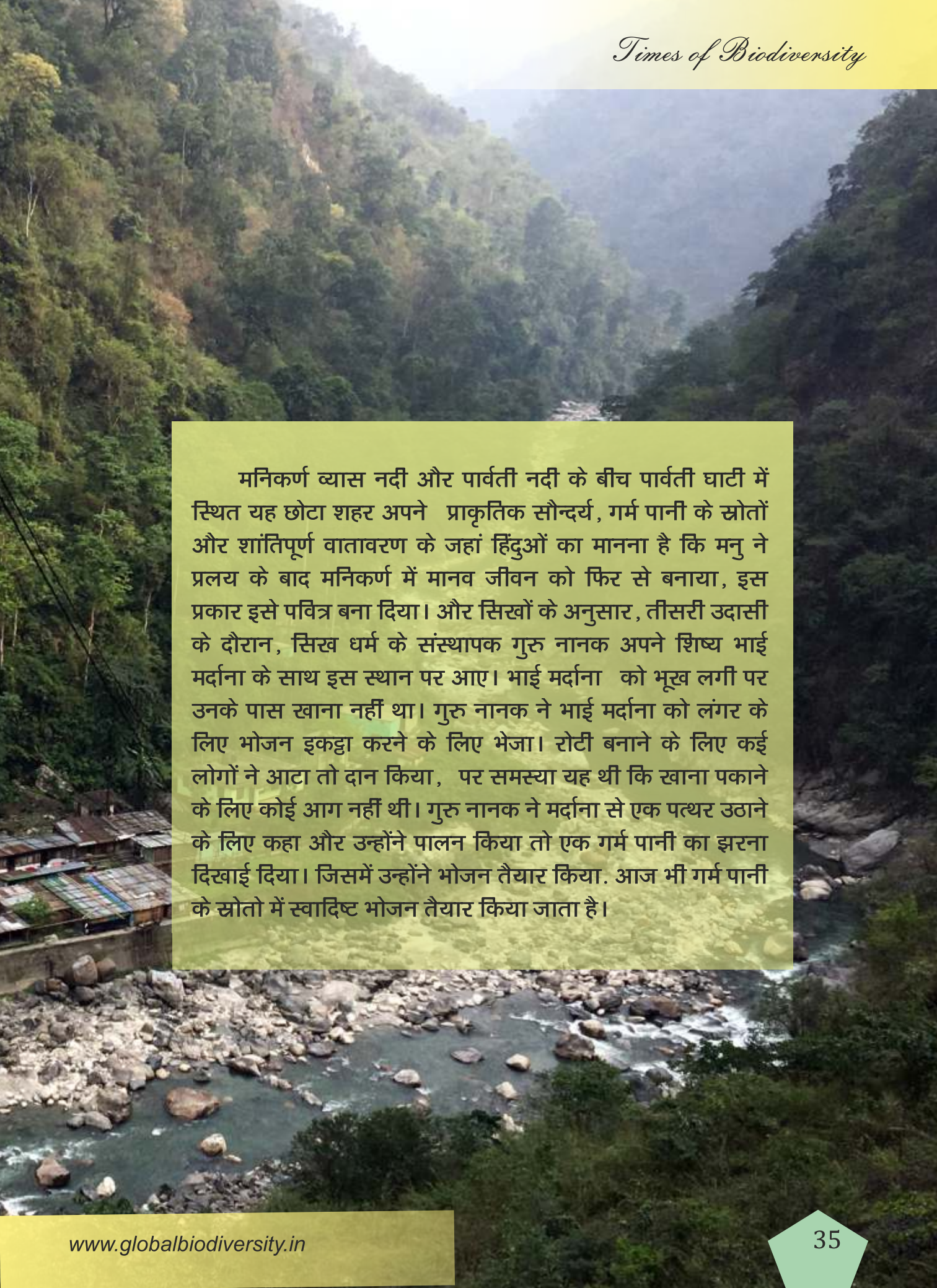

मनिकर्ण व्यास नदी और पार्वती नदी के बीच पार्वती घाटी में स्थित यह छोटा शहर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, गर्म पानी के स्रोतों और शांतिपूर्ण वातावरण के जहां हिंदुओं का मानना है कि मनु ने प्रलय के बाद मनिकर्ण में मानव जीवन को फिर से बनाया, इस प्रकार इसे पवित्र बना दिया। और सिखों के अनुसार, तीसरी उदासी के दौरान, सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक अपने शिष्य भाई मर्दाना के साथ इस स्थान पर आए। भाई मर्दाना को भूख लगी पर उनके पास खाना नहीं था। गुरु नानक ने भाई मर्दाना को लंगर के लिए भोजन इकट्ठा करने के लिए भेजा। रोटी बनाने के लिए कई लोगों ने आटा तो दान किया, पर समस्या यह थी कि खाना पकाने के लिए कोई आग नहीं थी। गुरु नानक ने मर्दाना से एक पत्थर उठाने के लिए कहा और उन्होंने पालन किया तो एक गर्म पानी का झरना दिखाई दिया। जिसमें उन्होंने भोजन तैयार किया. आज भी गर्म पानी के स्रोतो में स्वादिष्ट भोजन तैयार किया जाता है।

सिक्किम में कई पर्वत गर्म झरनों में से, रेशी गर्म झरना अपने प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक महत्व के कारण काफी लोकप्रिय है। रेसी के हॉट वाटर स्प्रिंग्स या चा–चू सर्दियों के प्राकृतिक और पारंपरिक स्पा हैं जहां पर्यटक और स्थानीय तीर्थ यात्री इन स्प्रिंग्स में एक हफ्ते या अधिक समय बिताने के लिए आते है, माना जाता है कि इन गर्म पानी के स्प्रिंग्स में औषधीय गुण हैं। रंगत नदी घाटी की ओर एक घंटा डाउन हिल ड्राइव के बाद यह गर्म वसंत पहुंचा जा सकता है। यह लेगशिप से लगभग 6 किमी दूर है।

यह हॉट स्प्रिंग रंगित नदी के किनारे स्थित है और दिसंबर से फरवरी तक इसका भ्रमण किया जा सकता है। रात में रहने के लिए नाममात्र दरों पर अस्थायी झोपड़ियां उपलब्ध हैं लेकिन सभी बिस्तर और खाना पकाने के बर्तनों को साथ ले जाना पड़ता है। पर्यटन सीजन के दौरान स्थानीय ग्रामीण डेयरी उत्पादों, जरूरी सब्जियां और राशन बेचने वाली छोटी दुकानें में सामान बेचते हैं।

नदी के नजदीक एक छोटा मठ और पवित्र गुफा है जिसे ''ल्हो खांद्रो सांग फुग'' कहा जाता है, जिसे तांत्रिक परी की गुफा भी कहा जाता है।

# Overview:

World Environment Day is the UN's most important day for encouraging worldwide awareness and action for the protection of our environment. Since it began in 1974, it has grown to become a global platform for public outreach that is widely celebrated in over 100 countries.

Source : worldenvironmentday.global

## BEAT PLASTIC POLLUTION

"Beat Plastic Pollution", the theme for World Environment Day 2018, is a call to action for all of us to come together to combat one of the great environmental challenges of our time. The theme invites us all to consider how we can make changes in our everyday lives to reduce the heavy burden of plastic pollution on our natural places, our wildlife – and our own health.

While plastic has many valuable uses, we have become over reliant on single-use or disposable plastic – with severe environmental consequences. This World Environment Day we'll be engaging partners from all corners of society and the world to join us in raising awareness and inspiring action to form the global movement needed to beat plastic pollution for good.

## INDIA 2018

India's emergence as a global environmental leader has been affirmed to the world in recent years. For those who know the country and its people, India's place in the vanguard on issues ranging from climate change to plastic pollution is a natural fit. In the months to come, India will once again display its leadership and innovation on the world stage.

As hosts to this year's World Environment Day, Indian communities large and small will lead a global charge to beat plastic pollution through civic engagement and celebration. With support from an inspiring cross section of Indian society, ranging from cricket pitches to board rooms, we're witnessing an unprecedented national commitment to this global cause, with the promise to make this the largest and most consequential World Environment Day ever.

### Global Plastic Pollution by the Numbers:

- 500 billion plastic bags used each year
- 13 million tonnes of plastic leak into the ocean each year
- 17 million barrels of oil used on plastic production each year
- 1 million plastic bottles bought every minute
- 100,000 marine animals killed by plastics each year
- 100 years for plastic to degrade in the environment
- 90% of bottled water found to contain plastic particles
- 83% of tap water found to contain plastic particles
- 50% of consumer plastics are single use
- 10% of all human-generated waste is plastic

### Key Messages:

To beat plastic pollution, we need to entirely rethink our approach to designing, producing and using plastic products. This World Environment Day, our goal is to inspire the kind of solutions that lead to sustainable behaviour change upstream. We'll build on the global momentum to beat plastic pollution and use World Environment Day as a turning point to inspire innovators, activists and leaders worldwide to do more than just clean up existing plastics, but also focus our action upstream. Our goal is to foster the dialogue that leads to new models for plastic production and consumption. Individuals, the private sector and policymakers all have critical roles to play.

- Plastic pollution is a defining environmental challenge for our time.
- In the next 10-15 years global plastic production is projected to nearly double.
- Avoiding the worst of these outcomes demands a complete rethinking of the way we produce, use and manage plastic.
- Individuals are increasingly exercising their power as consumers. People are turning down plastic straws and cutlery, cleaning beaches and coastlines, and reconsidering their purchase habits in supermarket aisles. If this happens enough, retailers will quickly get the message to ask their suppliers to do better.
- While these steps are a cause for celebration, the reality is that individual action alone cannot solve the problem. Even if every one of us does what we can to reduce our plastic footprint – and of course we must – we must also address the problem at its source.
- Consumers must not only be actors but drivers for the behaviour change that must also happen upstream.
- Ultimately, our plastic problem is one of design. Our manufacturing, distribution, consumption and trade systems for plastic – indeed our global economy – need to change.
- The linear model of planned obsolescence, in which items are designed to be thrown away immediately after use, sometimes after just seconds, must end.
- At the heart of this is extended producer responsibility, where manufacturers must be held to account for the entire life-cycle of their consumer products. At the same time, those companies actively embracing their social responsibility should be rewarded for moving to a more circular model of design and production, further incentivizing other companies to do the same.
- Changes to consumer and business practice must be supported and in some cases driven by policy.
- Policymakers and governments worldwide must safeguard precious environmental resources and indeed public health by encouraging sustainable production and consumption through legislation.
- To stem the rising tide of single-use plastics, we need government leadership and in some cases strong intervention.

- Many countries have already taken important steps in this direction.
- The plastic bag bans in place in more than nearly 100 countries prove just how powerful direct government action on plastics can be.

Calls to Action:

- Governments must lead, enacting strong policies that push for a more circular model of design and production of plastics.
  This World Environment Day, we're calling on every government to enact robust legislation to curb the production and use of unnecessary single-use plastics.
- The private sector must innovate, adopting business models that reduce the downstream impact of their products.
  This World Environment Day, we're calling on every plastic manufacturer to take responsibility for the pollution that their products are causing today, and make immediate investments in sustainable designs for tomorrow.
- Citizens must act as both consumers and informed citizens, demanding sustainable products and embracing sensible consumption habits in their own lives.
  This World Environment Day, we're calling on every plastic consumer to exercise their buying power by refusing single-use plastics.

Themes:

World Environment Day will seek to influence change in four key areas:

**Reducing Single-Use Plastics**
50% of the of consumer plastics are designed to be used only once, providing a momentary convenience before being discarded. Eliminating single-use plastics, both from design chains to our consumer habits is a critical first step to beat plastic pollution.

**Improving Waste Management**
Nearly one third of the plastics we use escape our collection systems. Once in the environment, plastics don't go away, they simply get smaller and smaller, last a century or more and increasingly find their way into our food chain. Waste management and recycling schemes are essential to a new plastics economy.

**Phasing Out Microplastics**
Recent studies show that over 90% of bottled water and even 83% of tap water contain microplastic particles. No one is sure what that means for human health, but trace amounts are turning up in our blood, stomachs, and lungs with increasing regularity. Humans add to the problem with micro-beads from beauty products and other non-recoverable materials.

**Promoting Research into Alternatives**
Alternative solutions to oil-based plastics are limited and difficult to scale. This doesn't need to be the case. Further research is needed to make sustainable plastic alternatives both economically viable and widely available.

Actions and Resolutions:

This World Environment Day is a culmination of years of effort by Member States aimed at focusing the world's attention and galvanizing action around plastic pollution. UN Environment and its Member States have been developing innovative science and forging new consensus on the complex relationships between plastics, society and the environment for decades. Most recently, the third United Nations Environment Assembly adopted resolution 3/7, which:

1. Stresses the importance of long-term elimination of discharge of litter and microplastics to the oceans and of avoiding detriment to marine ecosystems and the human activities dependent on them from marine litter and microplastics.
2. Urges all actors to step up actions to; "by 2025, prevent and significantly reduce marine pollution of all kinds, in particular from land-based activities, including marine debris and nutrient pollution".
3. Encourages all member States, based on best available knowledge of sources and levels of marine litter and microplastics in the environment, to prioritize policies and measures at the appropriate scale to avoid marine litter and microplastics from entering the marine environment.

BEAT PLASTIC POLLUTION | WORLD ENVIRONMENT DAY | UN environment

**Beat Plastic Pollution**
If you can't reuse it, refuse it
#BeatPlasticPollution

# Global Celebration India

## World Environment Day 2018

करेंगे संग प्लास्टिक प्रदूषण से जंग | विश्व पर्यावरण दिवस | UN environment

Editor's Desk

*India made a massive announcement yesterday: that the country will ban all single-use plastics by 2022.*

*Prime Minister Narendra Modi hailed World Environment Day as the start of a global movement to defeat single-use plastics, highlighting India's rapid economic development can be done in a way that is sustainable and green.*

*"It is the duty of each one of us, to ensure that the quest for material prosperity does not compromise our environment," Modi said. "The choices that we make today, will define our collective future. The choices may not be easy. But through awareness, technology, and a genuine global partnership, I am sure we can make the right choices. Let us all join together to beat plastic pollution and make this planet a better place to live."*

India went big in their commitment to Beat Plastic Pollution today, with an announcement to eliminate all single-use plastic in the country by 2022. This unprecedented ambitious move against disposable plastic will drastically stem the flow of plastics from 1.3 billion people and business in the fasted growing economy in the world.

Solidifying India's leadership of global sustainability, Dr. Harsh Vardhan, Minister of Environment, Forest and Climate Change pledged to "achieve the India of our dreams," announcing that single-use plastics would be banned in all Indian states by 2022.

"This has been the biggest, most resonant World Environment Day ever, thanks to the leadership of our global host India," Erik Solheim, Head of UN Environment, said. "India has made a phenomenal commitment and displayed clear, decisive and global environmental leadership. This will inspire the world and ignite real change."

The announcement was a powerful finale after weeks of activities around the country, seeing millions of Indians policymakers, celebrities, business Moghuls and small entrepreneurs, innovators, environmentalist, and activists come together to collectively take action on plastic pollution.

Among the highlights from the national celebrations was Modi's commitment to join UN Environment's Clean Seas campaign, which seeks to turn

the tide on marine litter. India has 7,500 km of coastline the 7th longest in Asia. As part of this commitment, the government will establish a national and regional marine litter action campaign as well as a program to measure the total marine plastic footprint in India's coastal waters.

The country further showcased innovative solutions to environmental challenges. The western state of Maharashtra introduced an urban e-mobility program to scale back emissions. Meanwhile, the state of Andhra Pradesh in India's southeast launched a scale-out plan to transition 6 million farms from conventional synthetic chemical agriculture to Zero-Budget Natural Farming.

As part of the official ceremony in Delhi, the Indian government, in collaboration with UN Environment also

launched a joint World Environment Day Report: "Single-use Plastics: A roadmap for Sustainability". Presenting case studies from more than 60 countries, the report analyzes the complex relationships in our plastics economy and offers an approach to rethink how the world produces, uses and manages single-use plastics.

# TIMES OF BIODIVERSITY

## A Magazine of Biodiversity & Environment

(ISO14001:2004 Certificate No. 1014ES52, Rg. No. 01/01/01/27346/13
16-A Janki Nagar, Near Suyash Hospital Chunabhatti, Kolar Road, Bhopal (M.P.)
Ph: 0755-2430036, Mobile: 9425029009 Email:dwarika30@yahoo.com, Website:www.globalbiodiversity.in

## Global Biodiversity Education Society Bhopal

# Subscription Form

I wish to subscribe the Monthly Magazine **"Times of Biodiversity"** of Global Biodiversity Education Society Bhopal. Kindly find the DD/Pay Order/ Cheque/ Cash in the name of Global Biodiversity Education Society, Bhopal payable at Bhopal. India as per the below mention request.

**Name :-** .....

**Job Title :-** .....

**Organization :-** .....

**Address :-** .....

.....

.....

**Pin code :-** .....

**Email :-** .....

**Telephone :-** **(O)**..... **(R)**.....

**Mobile :-** .....

**Fax :-** .....

**DD/Pay Order/Cheque No. :-**.....**Dt**.....**Amount**.....

**Bank Name :-** .....

Payable to **Times of Biodiversity** for RTGS **Branch Name State Bank of India, Arera Hills, Bhopal Account No. 36192196700** IFSC Code : **SBIN0030529** and send to the above mention address.

**Subscription Rates :-**

**Signature**

| Duration | One year | Two Year | Three Years | Life Membership |
|---|---|---|---|---|
| Student | 750/- | 1500/- | 2000/- | 8,000 (15 yrs) |
| Professional | 1000/- | 2000/- | 3000/- | 12,500 (15 yrs) |
| Institutional | 2000/- | 4000/- | 6000/- | 20,000 (15 yrs) |

Advertisement, News views, Programs Schemes and other details of institute will be covered in different issues of Magazine.

# World Environment Conference

**5-7 June 2018**

**Pragati Maidan, New Delhi (India)**

## अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस

22 मई 2018

के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागिता

# "डिजिटल इंडिया" का सपना सच करने की ओर मध्यप्रदेश सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

आदिवासी भाइयों और बहनों के लिये योजनाओं का लाभ लेने हेतु

## ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

## 05 जून, 2018 से प्रदेश के सभी जिलों में रजिस्ट्रेशन शुरू

जनजातीय कार्य विभाग द्वारा संचालित योजनाओं का सरलता से लाभ प्राप्त करें

## कैसे?

- घर के पास के किसी भी इंटरनेट कियोस्क पर जायें। एम.पी. ऑनलाइन/लोक सेवा केन्द्र/ नागरिक सुविधा केन्द्र पर निःशुल्क रजिस्ट्रेशन सेवा उपलब्ध।
- स्वयं के घर पर इन्टरनेट उपलब्ध होने पर विभागीय वेबसाइट www.tribal.mp.gov.in के माध्यम से प्रोफाइल रजिस्ट्रेशन करें।
- अपना आधार नंबर साथ लेकर जायें।
- डिजिटल जाति प्रमाण-पत्र साथ लेकर जायें। डिजिटल जाति प्रमाण-पत्र जारी करने की प्रक्रिया सरल की गयी है।
- अपनी और परिवार की समग्र आई.डी. भी साथ लेकर जायें।
- अपना चालू मोबाइल साथ लेकर जायें।
- रजिस्ट्रेशन के उपरांत पावती लेना ना भूलें।

## क्यों?

- शासकीय कार्यालयों के चक्कर काटे बिना योजना में देय राशि सीधे खाते में।
- बार-बार आवेदन देने की परेशानी से छूट।
- आवेदन स्वीकृति/प्रगति की सूचना सीधे आपके मोबाइल पर प्राप्त।
- हितग्राही एवं शासन के मध्य सीधा संवाद।

### रजिस्ट्रेशन से पूर्व निम्न बातें सुनिश्चित करें -

- **आधार** : आधार कार्ड में अपना सही नाम (हिन्दी एवं अंग्रेजी), जन्म की पूरी तारीख (दिन/महीना/साल), सही पता, सही मोबाइल नंबर अनिवार्यतः दर्ज करायें।
- **बैंक ई.के.वाई.सी.** : अपना बैंक या पोस्ट ऑफिस के खाते से आधार लिंक करायें।
- **डिजिटल जाति प्रमाण-पत्र** : पूर्व से बने जाति प्रमाण-पत्र को लोक सेवा गारंटी केंद्र से डिजिटल करायें।
- **समग्र आई.डी.** : आपकी एवं परिवार की समग्र आई.डी. यदि नहीं है, तो ग्राम पंचायत/नगरीय निकाय से बनवायें।
- समग्र में आधार नम्बर जुड़वायें।

**यही व्यवस्था अनुसूचित जाति वर्ग के लिये भी लागू है.**

**यह सभी सेवायें शीघ्र ही मोबाइल एप पर भी उपलब्ध होंगी.**

**वेबसाइट** : www.tribal.mp. gov.in, **सम्पर्क - दूरभाष** : 0755-4927346

■ **जनजातीय कार्य विभाग द्वारा जनहित में जारी** ■

/CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D18120

**Printed By :** Flexy Joseth, **Published by :** D. P. Tiwari on behalf owned by Global Biodiversity Education Society, Bhopal (M. P.) and printed at Maruti Enterprises, 12 Kotwali Road, Bhopal (M. P.) **Email** marutienterprises@rediffmail.com and Published at 16-A, Janki Nagar, Near Suyash Hospital Chunabhatti, Kolar Road Bhopal (M. P.) **Mobile No. 9425029009** Email - dwarika30@yahoo.com. **Editor** D. P. Tiwari